جायदाद हस्तांतरण के तीन तरीके:

हिबा, वसीयत और विरासत

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों!

हममें से अधिकांश लोगों का मसला है कि हम माल (धन-दौलत) की मुहब्बत में गिरफ्तार रहते हैं। हमारा ख़याल होता है कि माल हमने खुद कमाया है, लेकिन रब्बुल आलमीन का ऐलान यह है कि माल हमने दिया है। हमारी नाकिस अक्ल यह कहती है कि हम अपने माल को जैसे चाहें खर्च कर सकते हैं, लेकिन रब्बुल आलमीन का मंशा है कि मेरे दिए हुए माल में दूसरों का भी हक़ है – तुम्हारी ज़िन्दगी में भी और मरने के बाद भी। ज़िन्दगी में सबसे पहला हक माँ-बाप का है, फिर करीबी रिश्तेदारों का, यतीमों का, मिस्कीनों का, गरीबों का, मुसाफिर का, मांगने वालों का, पड़ोसी का, गुलामों को आज़ाद करने का और ज़कात इकट्ठा करने वालों का। अगर तूने हमारे दिए हुए माल को हमारी मर्ज़ी के मुताबिक खर्च किया तो तू जज़ा (इनाम) का हक़दार होगा, और अगर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक खर्च किया तो सज़ा का हक़दार होगा।

अल्लाह तआला हमें अपनी किताब क़ुरआन मजीद और अपने आखिरी नबी ﷺ के ज़रिए हिदायात देकर यह देखना चाहता है कि बंदा मेरे दिए हुए अहकाम पर अमल करता है या नहीं, क्योंकि आखिरत का फैसला हमारे आमाल पर ही होगा।

جائداد منتقل کرنے کے تین طریقے:

ہبہ، وصیت، میراث

میرے عزیزو!

ہم میں سے اکثر لوگوں کا مسئلہ ہے کہ ہم مال کی محبت میں گرفتار رہتے ہیں۔ ہمارا سوچنا ہوتا ہے کہ مال ہم نے کمایا ہے، لیکن ربّ العالمین کا اعلان ہے کہ مال ہم نے دیا ہے۔ ہماری ناقص عقل کہتی ہے کہ ہم جیسا چاہیں اپنے مال کو خرچ کر سکتے ہیں، لیکن ربّ العالمین کا منشا ہے کہ میرے دیے ہوئے مال میں دوسروں کا بھی حق ہے، تمھاری زندگی میں بھی اور مرنے کے بعد بھی۔ زندگی میں سب سے پہلا حق والدین کا ہے، اس کے بعد قریبی رشتہ داروں، یتیموں، مسکینوں، غریبوں، مسافروں، مانگنے والوں، پڑوسیوں، ہمسایوں اور غلاموں کو آزاد کرنے اور زکوٰۃ اکٹھا کرنے والوں کا ہے۔ اگر تو نے ہمارا دیا ہوا مال ہماری مرضی کے مطابق خرچ کیا تو تو جزا کا حق دار ہوگا اور اگر اپنی خواہش کے مطابق خرچ کیا تو سزا کا حق دار ہوگا۔ اللہ تعالیٰ ہمیں اپنی کتاب قرآن مجید اور اپنے آخری نبی ﷺ کے ذریعے ہدایات دے کر یہ دیکھنا چاہتا ہے کہ میرے دیے ہوئے احکام کے مطابق بندہ عمل کرتا ہے یا نہیں، کیوں کہ آخرت کا فیصلہ ہمارے اعمال پر ہی ہوگا۔

کیوں جاننا ضروری ہے ہبہ، وصیت اور میراث کے بارے میں؟

ہر مسلمان کے لئے یہ جاننا ضروری ہے کہ ہبہ، وصیت اور میراث کے اسلامی احکام کیا ہیں؟ کیوں کہ اکثر لوگ چاہتے ہیں کہ اللہ کے فضل سے کمایا ہوا مال ان کی وفات کے بعد صرف بیوی بچوں میں تقسیم ہو جائے۔ ہم لاعلمی یا غفلت کی وجہ سے اپنی اولاد کے لیے ایسی وصیت لکھ دیتے ہیں، بغیر یہ سوچے کہ شریعت نے ایسا کرنے سے منع تو نہیں کیا ہے؟ جب کہ شریعت کے مطابق کسی اور کا بھی حصہ ہماری کمائی میں ہو سکتا ہے، اس لیے یہ موضوع بہت اہم ہے۔

ہبہ کیا ہے؟

اپنی زندگی میں کسی جائیداد یا مال کو دوسرے شخص کے نام مکمل ملکیت کے ساتھ بغیر کسی قیمت کے منتقل کرنا ہبہ کہلاتا ہے۔ کوئی شخص اپنی تمام یا کچھ جائیداد اپنے قریبی یا غیر قریبی رشتہ داروں کو برابر یا کمی بیشی کے ساتھ ہبہ کر سکتا ہے۔ اگر جائیداد اپنی اولاد (بیٹوں اور بیٹیوں) کو دی جا رہی ہو تو اسے ان کے درمیان برابر تقسیم کرنا ضروری ہے، البتہ ضرورت کے مطابق کمی بیشی کر سکتے ہیں۔ ہبہ وصیت کے برابر نہیں ہے اور نہ ہی میراث کے برابر۔

مسلم–۴۱۷۷، ۴۱۸۱، ۴۱۸۲؛ ترمذی–۲۱۳۰، ۲۱۳۱

وصیت کیا ہے؟

مرنے کے بعد اپنی جائیداد یا مال کو کسی شخص کے نام مکمل ملکیت کے ساتھ منتقل کرنے کو وصیت کہا جاتا ہے۔ وصیت شرعی وارثوں کے حق میں نہیں کی جا سکتی۔ وصیت کو زندگی میں تحریر کرنا ضروری ہے، لیکن اس پر عمل وفات کے بعد ہوگا۔ اس کی زیادہ سے زیادہ حد ایک تہائی ہے اور یہ صرف غیر وارثوں کے لیے کی جا سکتی ہے۔ وصیت پوری جائیداد پر لاگو نہیں ہوتی، بلکہ تدفین کے اخراجات اور قرض کی ادائیگی کے بعد جو مال باقی بچے،

हिबा, वसीयत और विरासत के बारे में जानना क्यों ज़रूरी है?

हर मुसलमान के लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ज्यादातर लोग चाहते हैं कि अल्लाह के फज़्ल से कमाया हुआ माल उनकी वफात के बाद सिर्फ बीवी-बच्चों में बंट जाए। और हम नादानी या गफलत की वजह से अपनी औलाद के लिए ऐसी वसीयत लिख देते हैं, बिना यह सोचे कि शरीयत ने ऐसा करने से मना तो नहीं किया? जब कि शरीयत के मुताबिक हमारी कमाई में किसी और का भी हिस्सा हो सकता है। इसलिए यह विषय बहुत अहम है।

हिबा क्या है?

अपनी ज़िन्दगी में किसी जायदाद या माल को किसी दूसरे शख्स के नाम पूरी मालिकियत के साथ बिना किसी कीमत के हस्तांतरित करना हिबा कहलाता है। कोई शख्स अपनी सारी या कुछ जायदाद अपने करीबी या गैर-करीबी रिश्तेदारों को बराबर या कम-ज्यादा के साथ हिबा कर सकता है। लेकिन अगर जायदाद अपनी औलाद (बेटों-बेटियों) को दी जा रही हो तो उनके बीच बराबर बाँटना ज़रूरी है, हालांकि ज़रूरत के मुताबिक थोड़ा कम या ज्यादा किया जा सकता है। हिबा न तो वसीयत के बराबर है और न ही विरासत के।

(सही मुस्लिम 4177, 4181, 4182; तिरमिज़ी 2130, 2131)

वसीयत क्या है?

मरने के बाद अपनी जायदाद या माल को किसी शख्स के नाम पूरी मालिकियत के साथ हस्तांतरित करने की लिखित इच्छा को वसीयत कहते हैं। लेकिन वसीयत शरई वारिसों के हक में नहीं की जा सकती। वसीयत ज़िन्दगी में लिखी जाती है, लेकिन उस पर अमल मौत के बाद होता है। वसीयत की अधिकतम हद एक तिहाई है और यह सिर्फ गैर-वारिसों (जो शरई हिस्सा न पाते हों) के लिए की जाती है। वसीयत पूरी जायदाद पर लागू नहीं होती; बल्कि दफ़न के खर्चे और कर्ज़ अदा करने के बाद जो माल बचे, उसी में से एक तिहाई तक वसीयत नाफ़िज़ की जाएगी।

(नोट: अगर किसी को डर हो कि उसके वारिस उसकी मौत के बाद विरासत का इंसाफ से बँटवारा नहीं कर सकेंगे, तो वह उनके शरई हिस्सों के मुताबिक वसीयत लिख सकता है। उलमा इसे जायज़ ठहराते हैं। लेकिन अगर वसीयत लिखने वाले की मौत से पहले कोई वारिस मर जाए या नया बच्चा पैदा हो जाए जो वारिस बने, तो पुरानी वसीयत रद्द हो जाएगी और नई वसीयत लिखनी पड़ेगी।)

(कुरआन 4:11; बुखारी 6723, 2740-2744; अबू दाऊद 2870, 2922; मिश्कात 3071-3073, 3075)

विरासत क्या है?

मरने वाले की जायदाद या माल को उसके शरई वारिसों में इस्लामी कानून-ए-मीरास के मुताबिक बाँटना विरासत कहलाती है। विरासत पूरी जायदाद पर फौरन लागू नहीं होती; बल्कि दफन के खर्च, कर्ज़ अदा करने और वसीयत पूरी करने के बाद जो माल बचे, उसी पर विरासत नाफ़िज़ होती है। इस्लाम में विरासत के अहकाम कुरआन मजीद में साफ-साफ बयान किए गए हैं और हर मुसलमान पर इन पर अमल करना लाज़िम है।

(कुरआन: सूरह अन-निसा 4:7, 4:11, 4:12, 4:176; सहीह बुखारी 6732; सहीह मुस्लिम 1615; इब्न माजा 2719; दारमी 2923)

अल्लाह तआला से दुआ है कि ऊपर बताई गई बातों को सीखने, सिखाने और उन पर अमल करने की हमें तौफीक अता फरमाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

اسلامک انھیرٹنس ریسرچ سینٹر

ابوالفضل انکلیو، جامعہ نگر، اوکھلا نئی دہلی۔25

رابطہ نمبر: +91-9871481152

connectiirc@gmail.com

iirc.org.in

visit: iirc.org.in

ہماری ویب سائٹ دیکھیں

Scan to Live Class

تقسیم میراث کے لیے ویڈیوں دیکھیں

اسی میں سے وصیت نافذ کی جائے گی۔

(اگر کسی شخص کو یہ اندیشہ ہو کہ اس کی موت کے بعد اس کے ورثہ تقسیمِ میراث میں انصاف نہ کر سکیں گے تو وہ ان کے شرعی حصوں کے مطابق وصیت لکھ سکتا ہے۔ علماء کی رائے میں ایسا کرنا درست ہے۔ البتہ اگر وصیت لکھنے والے کی وفات سے پہلے اس کے کسی وارث کا انتقال ہو جائے، یا ایسا بچہ پیدا ہو جائے جو وارث بنتا ہو تو یہ لکھی ہوئی وصیت نافذ نہیں ہوگی اور اس کو دوبارہ نئی وصیت لکھنی پڑے گی۔)

قرآن ۱۱:۴؛ بخاری—۶۷۲۳، ۲۷۴۰، ۲۷۴۲؛ ابوداود—۲۸۷۰، ۲۹۲۲؛ مشکوٰۃ—۳۰۷۱، ۳۰۷۲، ۳۰۷۳، ۳۰۷۵

میراث کیا ہے؟

مرنے والے شخص کی جائیداد یا مال کو اس کے شرعی وارثوں میں اسلامی قانون کے مطابق تقسیم کرنا میراث کہلاتی ہے۔ میراث پوری جائیداد پر فوراً لاگو نہیں ہوتی، بلکہ تدفین کے اخراجات، قرض کی ادائگی اور وصیت پوری ہونے کے بعد جو مال باقی بچے اسی پر نافذ ہوتی ہے۔ اسلام میں میراث کے احکام قرآن کریم میں واضح طور پر بیان کیے گئے ہیں اور ان پر عمل کرنا ہر مسلمان پر لازم ہے۔

قرآن: سورۃ النساء (۴:۷، ۴:۱۱، ۴:۱۲، ۴:۱۷۶)

صحیح بخاری ۶۷۳۲، صحیح مسلم ۱۶۱۵، ابن ماجہ ۲۷۱۹، دارمی ۲۹۲۳

اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ اوپر بتائی گئی باتوں کو سیکھنے، سکھانے اور عمل کرنے کی ہمیں توفیق عطا فرمائے۔ آمین یاربّ العالمین۔

تقسیم میراث پر مفت کلاسز

وقت : 9:30 سے 10:30 رات دن : صرف جمعہ

Zoom ID : 923 659 2939 Password : 1234